IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"भारत और नेपाल के बीच द्विपक्षीय कूटनीति का विकास (2004–2023): रणनीतिक बदलाव और निरंतरता का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण"

[1]प्रदीप कुमार कसौधन

शोधार्थी

राजनीति विज्ञान विभाग

एम०एल०के० पी०जी० कॉलेज बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु)

सिद्धार्थनगर

सारः यह शोध पत्र 2004 से 2023 तक भारत–नेपाल द्विपक्षीय कूटनीति के विकास की आलोचनात्मक जांच करता है, जिसमें रणनीतिक बदलावों और स्थायी निरंतरताओं के जटिल अंतर्संबंध पर ध्यान केंद्रित किया गया है। अध्ययन में पता लगाया गया है कि कैसे नेपाल का राजशाही से गणतंत्र में परिवर्तन, मुखर राष्ट्रवाद का उदय और चीन के बढ़ते प्रभाव ने इसकी विदेश नीति की प्राथमिकताओं को नया रूप दिया। साथ ही, यह भारत के पुनर्संयोजित दृष्टिकोण का मूल्यांकन करता है – आधिपत्य से विकासात्मक साझेदारी तक इसकी 'पड़ोसी पहले' नीति के ढांचे के भीतर। ऐतिहासिक संधियों, 2015 की नाकाबंदी और 2020 के सीमा मानचित्र विवाद जैसी समकालीन घटनाओं और क्षेत्रीय शक्ति पुनर्संरेखण के आधार पर, यह पत्र नेपाल की कूटनीतिक एजेंसी और भारत की रणनीतिक लचीलेपन में स्पष्ट बदलावों की पहचान करता है। इन परिवर्तनों के बावजूद, मौलिक निरंतरताओं, भौगोलिक परस्पर निर्भरता, सांस्कृतिक आत्मीयता और सामाजिक–आर्थिक संबंधों ने द्विपक्षीय संबंधों के लचीलेपन को बनाए रखा है। विश्लेषण से पता चलता है कि भारत–नेपाल कूटनीति ने एक अधिक बहुलवादी और मुद्दा–आधारित चरण में प्रवेश किया है, लेकिन संधि संशोधन, सीमा सीमांकन और अल्पसंख्यक शिकायतों जैसी अनसुलझी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि भविष्य की भागीदारी संस्थागत तंत्र, संप्रभुता के लिए आपसी सम्मान और व्यावहारिक सहयोग पर आधारित होनी चाहिए, खासकर ऊर्जा, कनेक्टिविटी और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे क्षेत्रों

में। भारत और नेपाल में आदर्श पड़ोसी बनने की क्षमता है, अगर रणनीतिक स्वायत्तता को रचनात्मक परस्पर निर्भरता के साथ संतुलित किया जाए।

सूचक शब्दः द्विपक्षीय कूटनीति, रणनीतिक बदलाव, भू–राजनीतिक पुनर्संरेखण, चीन कारक, 1950 संधि, दक्षिण एशिया, राजनीतिक संक्रमण, आर्थिक अंतरनिर्भरता, पड़ोसी प्रथम नीति आदि।

1. परिचय

भारत और नेपाल के बीच कूटनीतिक संबंध दक्षिण एशिया में सबसे अनोखे संबंधों में से एक है, जिसकी विशेषता गहरी सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक और भू–राजनीतिक संबंध हैं। उनकी निकटता और साझा विरासत के बावजूद, द्विपक्षीय गतिशीलता अक्सर जटिल रही है, जिसमें पारस्परिक निर्भरता, विषमता, रणनीतिक संदेह और समय–समय पर गर्मजोशी की विशेषता रही है। पिछले कुछ वर्षों में, इस रिश्ते में परिवर्तन के कई चरण आए हैं, जो अक्सर नेपाल में घरेलू राजनीतिक परिवर्तनों, क्षेत्रीय गठबंधनों में बदलाव और भारत की उभरती विदेश नीति प्राथमिकताओं से प्रभावित रहे हैं[1]।

2004 से 2023 तक की अवधि भारत–नेपाल कूटनीति में एक विशेष रूप से परिवर्तनकारी अध्याय का प्रतिनिधित्व करतो है। यह समयरेखा नेपाल के आंतरिक संघर्ष की छाया में शुरू होती है, जिसमें इसकी राजशाही का पतन और एक संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य का उदय शामिल है, और भारत के बदलते नेतृत्व को शामिल करता है – संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (UPA) से लेकर भारतीय जनता पार्टी (BJP) तक। ये आंतरिक बदलाव वैश्विक और क्षेत्रीय परिवर्तनों, विशेष रूप से दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते प्रभाव के समानांतर थे, जिसने काठमांडू की विदेश नीति के विकल्पों को तेजी से आकार दिया[2]।

नेपाल के राजनीतिक परिवर्तन में भारत की कथित भूमिका, विवादास्पद 2015 की नाकाबंदी, कालापानी और लिपुलेख पर सीमा विवादों का बढ़ना और चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के साथ नेपाल की बढ़ती भागीदारी जैसी कई उल्लेखनीय घटनाएँ इस अवधि की रणनीतिक तरलता को रेखांकित करती हैं। साथ ही, लोगों के बीच संबंध, खुलो सीमाएँ और आर्थिक परस्पर निर्भरता लगातार बनी रहीं, जिससे इस विकसित होते द्विपक्षीय समीकरण में निरंतरता के तत्व सामने आए।

यह पत्र 2004 और 2023 के बीच भारत–नेपाल द्विपक्षीय कूटनीति में रणनीतिक बदलावों और निरंतरताओं की आलोचनात्मक जाँच करता है। यह निम्नलिखित प्रमुख प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करता हैः

1. नेपाल में घरेलू राजनीतिक परिवर्तनों ने भारत के प्रति उसके कूटनीतिक दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित किया है?
2. क्षेत्रीय चुनौतियों के मद्देनजर भारत ने अपनी नेपाल नीति को किस तरह से पुनर्गठित किया है?

3. पारंपरिक रणनीतिक विषमता किस हद तक बनी हुई है या कम हुई है?
4. सहयोग और घर्षण के आवर्ती विषय क्या हैं?

यह विश्लेषण संधियों सहित प्राथमिक स्रोतों और राजनीति विज्ञान, क्षेत्रीय अध्ययन और सामरिक मामलों से माध्यमिक साहित्य के मिश्रण पर आधारित है। इसका उद्देश्य भारत–नेपाल कूटनीति में निरंतरता और परिवर्तन की सूक्ष्म समझ प्रदान करना है, जो प्रभुत्व या विश्वासघात की न्यूनतावादी व्याख्याओं से आगे बढ़ता है।

2. भारत–नेपाल कूटनीति का ऐतिहासिक संदर्भ और आधार

भारत–नेपाल संबंध साझा सभ्यतागत इतिहास, खुली सीमाओं और मजबूत सामाजिक–सांस्कृतिक और धार्मिक बंधनों में निहित हैं। इन संबंधों ने पारंपरिक रूप से घनिष्ठ, यद्यपि विषम, संबंध सुनिश्चित किए हैं, जिसमें भारत ने अक्सर राजनीतिक और आर्थिक रूप से प्रमुख भूमिका निभाई है। इस द्विपक्षीय कूटनीति के 2004 के बाद के विकास को समझने के लिए इसके आधारभूत ढाँचों और ऐतिहासिक प्रक्षेपवक्र की स्पष्ट समझ की आवश्यकता है[3]।

आधुनिक भारत–नेपाल संबंधों की कूटनीतिक आधारशिला 1950 की शांति और मैत्री संधि है, जिसने घनिष्ठ द्विपक्षीय सहयोग को संस्थागत रूप दिया। इस संधि ने खुली सीमाओं, निवास और रोजगार के पारस्परिक अधिकारों और रक्षा और विदेश नीति के मामलों पर आपसी परामर्श की अनुमति दी। भारत के लिए, इस समझौते ने संभावित बाहरी खतरों, विशेष रूप से चीन से, के खिलाफ एक बफर राज्य सुनिश्चित किया। नेपाल के लिए, इसे शुरू में अपने आधुनिक राज्य के शुरुआती वर्षों में संप्रभुता और स्थिरता बनाए रखने के लिए एक आवश्यक व्यवस्था के रूप में देखा गया था।

हालांकि, समय के साथ, नेपाली राजनीतिक अभिजात वर्ग और नागरिक समाज ने इस संधि को भारतीय आधिपत्य के प्रतीक के रूप में देखा, जिसने नेपाल के संप्रभु निर्णय लेने को प्रतिबंधित कर दिया, विशेष रूप से विदेशी और सुरक्षा मामलों में। संधि की समीक्षा या प्रतिस्थापन के लिए नेपाल के राजनीतिक विमर्श में आह्वान बार–बार किया गया है, विशेष रूप से राष्ट्रवादी या वामपंथी सरकारों के दौरान, जो द्विपक्षीय कूटनीति की आधारभूत समझ में गहरे तनाव को दर्शाता है[4]।

भौगोलिक रूप से, नेपाल चारों ओर से घिरा हुआ है और लगभग पूरी तरह से भारत से घिरा हुआ है, जिसमें नेपाल के अधिकांश व्यापार और पारगमन मार्ग भारत के हैं। यह आर्थिक और अवसंरचनात्मक निर्भरता संबंधों की एक निरंतर विशेषता रही है। भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार, विदेशी निवेश का प्रमुख स्रोत और ईंधन और भोजन जैसे आवश्यक आयातों का प्राथमिक मार्ग है।

सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से, भारत और नेपाल साझा हिंदू परंपराओं, तीर्थयात्राओं, भाषाई ओवरलैप (विशेष रूप से तराई क्षेत्र में) और सीमा पार पारिवारिक संबंधों के माध्यम से निकटता से जुड़े हुए हैं। इन संबंधों ने लोगों पर केंद्रित संबंधों को बढ़ावा दिया है जो औपचारिक कूटनीतिक तंत्र से परे हैं और राजनीतिक तनाव के दौर में भी काफो हद तक स्थिर रहे हैं[5]।

सुरक्षा के दृष्टिकोण से, भारत लंबे समय से नेपाल को अपने रणनीतिक क्षेत्र का हिस्सा मानता रहा है। खुली सीमा ने आर्थिक और सामाजिक संबंधों को बढ़ावा देने के साथ–साथ संभावित सीमा पार आतंकवाद, तस्करी और चीनी खुफिया गतिविधियों के बारे में नई दिल्ली में चिंता भी पैदा की है। इस प्रकार नेपाल की राजनीतिक स्थिरता में भारत की रुचि न केवल पड़ोसी की चिंता से बल्कि हिमालयी क्षेत्र में बाहरी प्रभाव की रोकथाम सहित रणनीतिक अनिवार्यताओं से भी प्रेरित है[6]।

शीत युद्ध के दौरान और विशेष रूप से तिब्बत पर चीन के कब्जे के बाद, नेपाल के प्रति भारत के रणनीतिक दृष्टिकोण ने भू–राजनीतिक अलगाव पर जोर दिया – यह सुनिश्चित करना कि कोई भी विदेशी (विशेष रूप से चीनी) सैन्य या आर्थिक प्रभाव नेपाल में भारतीय प्रधानता को चुनौती न दे सके। इस दृष्टिकोण ने 20वों सदी में भारत के कूटनीतिक व्यवहार को गहराई से प्रभावित किया।

3. भारत–नेपाल संबंध (2004–2015): राजनीतिक परिवर्तन और रणनीतिक पुनर्गठन

2004 से 2015 तक की अवधि नेपाल में गहन राजनीतिक परिवर्तन का समय रही, जिसके साथ भारत की ओर से उतार–चढ़ाव भरे रणनीतिक जवाब भी आए। इस दौरान, नेपाल संवैधानिक राजतंत्र से धर्मनिरपेक्ष संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य में परिवर्तित हो गया। भारत, नेपाल के लोकतंत्रीकरण का समर्थन करते हुए, अक्सर रचनात्मक जुड़ाव और कथित हस्तक्षेप के बीच एक महीन रेखा पर चलता रहा[7]। इस अवधि में रणनीतिक जटिलता भी बढ़ती देखी गई, क्योंकि भारत की पारंपरिक प्रधानता नेपाल में आंतरिक अभिनेताओं और बाहरी भू–राजनीतिक रुझानों दोनों द्वारा तेजी से विवादित हो रही थी।

2004 तक, नेपाल एक हिंसक माओवादी विद्रोह की चपेट में था, जो 1996 में शुरू हुआ था और जिसने हजारों लोगों की जान ले ली थी। भारत ने शुरू में माओवादियों को एक आतंकवादी संगठन घोषित किया और नेपाल की संवैधानिक राजशाही का समर्थन किया। हालांकि, 2005 तक, राजा ज्ञानेंद्र द्वारा कार्यकारी शक्ति पर सीधे कब्जा करने के बाद, भारत ने अपनी स्थिति को फिर से संतुलित किया। इसने नेपाल में सात पार्टी गठबंधन (एसपीए) का समर्थन करने की ओर रुख किया और माओवादियों के साथ बातचीत को प्रोत्साहित किया।

भारत ने 2005 में माओवादियों और एसपीए के बीच 12–सूत्री समझौते को सुगम बनाने में एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक भूमिका निभाई, जिसके परिणामस्वरूप 2006 में जन आंदोलन (जन आंदोलन II) शुरू हुआ। इस जन आंदोलन के परिणामस्वरूप निरंकुश राजशाही का अंत हुआ और संसद की बहाली हुई। 2008 में, राजशाही को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया गया और नेपाल को एक धर्मनिरपेक्ष संघीय गणराज्य घोषित किया गया। इस संक्रमण के दौरान भारत की भागीदारी पर्याप्त थी, फिर भी नेपाल में कई लोगों ने इसे अतिशयोक्ति के लिए आलोचना भी की, विशेष रूप से बैकचौनल वार्ता और संविधान–निर्माण बहस में शामिल होने के माध्यम से[8]।

2008 के संविधान सभा चुनावों में एकीकृत कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (माओवादी) की चुनावी सफलता ने भारत में कई लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। शुरुआत में सतर्क रहने के बाद, नई दिल्ली ने धीरे–धीरे माओवादी नेताओं के साथ औपचारिक कूटनीतिक चौनल खोल। हालाँकि, भारत की भागीदारी में मेल–मिलाप और अविश्वास के दौर बारी–बारी से देखे गए, खास तौर पर जब पुष्प कमल दहल (प्रचंड) जैसे माओवादी नेताओं ने भारत विरोधी रुख अपनाया या चीन की ओर झुकाव दिखाया।

2008 और 2012 के बीच नेपाल में लगातार हुए सरकारो बदलावों के दौरान भारत के प्रभाव को, जिसमें विशिष्ट मंत्रिमंडलों को हटाने या उनके गठन में मदद करने के आरोप शामिल हैं, अक्सर नेपाली हितधारकों द्वारा राजनीतिक रूप से जोड़–तोड़ के रूप में देखा जाता था। इस धारणा ने धीरे–धीरे काठमांडू में अधिक रणनोतिक स्वायत्तता की इच्छा को बढ़ावा दिया और विभिन्न राजनीतिक हलकों में भारत विरोधी भावना को तीव्र किया।

शायद इस अवधि के दौरान सबसे महत्वपूर्ण फ्लैशपॉइंट 2015 में आया, जब नेपाल ने लगभग एक दशक के राजनीतिक गतिरोध के बाद अपना नया संविधान लागू किया। भारत ने मधेसी और थारू समुदायों को बाहर करने पर औपचारिक चिंता व्यक्त की, जिनके बिहार और उत्तर प्रदेश में भारतीय सीमा के पार मजबूत सांस्कृतिक और पारिवारिक संबंध हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भारतीय सरकार ने संविधान को अंतिम रूप देने से पहले व्यापक सहमति बनाने का आह्वान किया[9]।

सितंबर 2015 में संविधान को अपनाने के तुरंत बाद, नेपाल को सीमा प्रवेश बिंदुओं पर माल और ईंधन की गंभीर बाधा का सामना करना पड़ा, जिसे व्यापक रूप से एक अनौपचारिक भारतीय नाकाबंदी के रूप में माना गया – हालांकि भारत ने ऐसी किसी भी नाकाबंदी को लागू करने से इनकार किया। आधिकारिक रुख के बावजूद, परिणामस्वरूप मानवीय संकट और ईंधन की कमी ने आम नेपालियों के बीच भारत की छवि को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाया और राष्ट्रवादी आख्यानों को बढ़ावा दिया।

2015 के संकट ने कूटनीतिक संबंधों को काफी हद तक प्रभावित किया। इसने भारत विरोधी भावना को बढ़ावा दिया, खासकर शहरी केंद्रों और युवा जनसांख्यिकी के बीच। इसने नेपाल में चीन की बढ़ती आर्थिक और राजनीतिक उपस्थिति के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर भी प्रदान किया, क्योंकि काठमांड् भारतीय व्यापार मार्गों और आपूर्ति श्रृंखलाओं पर अपनी अत्यधिक निर्भरता के विकल्प तलाश रहा था।

4. भारत–नेपाल संबंध (2016–2023): जोर, संतुलन और कूटनीतिक पुनर्संतुलन

2016 से 2023 की अवधि में नेपाल की विदेश नीति में स्पष्ट पुनर्संतुलन और भारत की ओर से रणनीतिक प्रतिक्रिया देखी गई। 2015 के संवैधानिक संकट और उसके साथ ईंधन की कमी का अनुभव करने के बाद, नेपाल ने इस चरण में अधिक मुखर रुख के साथ प्रवेश किया, अपने अंतर्राष्ट्रीय जुड़ावों में विविधता लाने की कोशिश की। बदले में, भारत ने अपनी श्पड़ासी पहलेश नीति के तहत सुलह और रणनीतिक आउटरीच प्रयासों का मिश्रण अपनाया, साथ ही नई चुनौतियों का भी सामना किया, खासकर नेपाल के आंतरिक और बाहरी मामलों में चीन के बढ़ते प्रभाव का[10]।

2015 के संवैधानिक संकट के दौरान कथित भारतीय नाकाबंदी और कूटनीतिक दबाव के जवाब में, नेपाल ने भारत पर निर्भरता कम करने के प्रयासों को तेज कर दिया, खासकर व्यापार और ईंधन आपूर्ति के मामले में। प्रधान मंत्री के.पी. शर्मा ओली के अनुसार, नेपाल ने चीन के साथ व्यापार और पारगमन समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें चीनी बंदरगाहों तक पहुँच और चीन की बेल्ट एंड रोड पहल (BRI) का नेपाल में विस्तार शामिल है।

चीन की ओर यह झुकाव केवल प्रतीकात्मक नहीं था। चीन ने नेपाल में महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में निवेश किया– सड़कें, जलविद्युत संयंत्र और काठमांडू को तिब्बत से जोड़ने वाली प्रस्तावित रेलवे। शिक्षा, पर्यटन और सांस्कृतिक कूटनीति में बढ़ती भागीदारी के माध्यम से चीनी सॉफ्ट पावर भी बढ़ी। इन घटनाक्रमों ने नेपाल के रणनीतिक संतुलन का संकेत दिया–भारत के साथ व्यवहार में अधिक स्वायत्तता हासिल करने के लिए चीन के साथ अपने संबंधों का लाभ उठाना।

नेपाल में बढ़ती भारत विरोधी भावना का सामना करते हुए, नई दिल्ली ने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अपने कूटनीतिक दृष्टिकोण को फिर से निर्धारित किया। भारत सरकार ने उच्च–स्तरीय यात्राओं, लोगों पर केंद्रित कूटनीति और कनेक्टिविटी परियोजनाओं को प्राथमिकता दी[11]। मोदी की 2018 की नेपाल यात्रा में धार्मिक कूटनीति शामिल थी – पवित्र हिंदू स्थलों जनकपुर और मुक्तिनाथ का दौरा एक नरम शक्ति संकेत के रूप में जिसे आम तौर पर अच्छी तरह से प्राप्त किया गया था।

भारत ने बुनियादी ढांचे और ऊर्जा सहयोग को भी गहरा करने की कोशिश की:

- सीमा पार पेटोलियम पाइपलाइन (जैसे मोतिहारी–अमलेखगंज पाइपलाइन) पूरी हो गई।
- अरुण III जैसी जलविद्युत परियोजनाएं आगे बढ़ीं, जिसमें भारत ने नेपाल की ऊर्जा क्षमता में निवेश किया।
- भारत ने सीमा पार रेल और सड़क संपर्क में अपने निवेश को बढ़ाया, विकास को रणनीतिक पहुंच के साथ जोड़ा।

कोविड–19 महामारी के दौरान, भारत अपनी "वैक्सीन मैत्री" पहल के तहत नेपाल को टीके भेजने वाला पहला देश था, जिसने स्वास्थ्य कूटनीति को मजबूत किया। इन कार्रवाइयों ने लेन–देन संबंधी कूटनीति से पारस्परिक लाभ और लोगों के बीच सद्भावना पर आधारित कूटनीति में बदलाव को प्रदर्शित किया, हालांकि अंतर्निहित रणनीतिक गणनाएँ बनी रहीं।

बेहतर जुड़ाव के बावजूद, 2020 में द्विपक्षीय तनाव फिर से उभर आया जब भारत ने लिपुलेख दर्रे के लिए एक नई सड़क लिंक का उद्घाटन किया, एक ऐसा क्षेत्र जिसे नेपाल अपने क्षेत्र का हिस्सा बताता है। जवाब में, नेपाल ने कालापानी, लिपुलेख और लिंपियाधुरा को अपने संप्रभु क्षेत्र के हिस्से के रूप में शामिल करते हुए एक नया राजनीतिक मानचित्र जारी किया। ओली सरकार ने इस मानचित्र को औपचारिक रूप देने के लिए संविधान में संशोधन किया, जिससे कूटनीतिक तनाव की एक नई लहर शुरू हो गई[12]।

भारत ने संशोधित मानचित्र को अस्वीकार कर दिया, इसे "दावों का कृत्रिम विस्तार" कहा। इस प्रकरण ने नेपाल में राष्ट्रवादी बयानबाजी को फिर से हवा दे दी, विशेष रूप से नेपाली संप्रभुता के लिए भारत की कथित उपेक्षा के खिलाफ। भारत के लिए, मानचित्र विवाद को राजनीति से प्रेरित माना गया, खासकर नेपाल में आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता के बीच। इस विवाद में गहरी चिंताएँ झलकती हैं, भारत को अपने पड़ोस में चीन के लिए रणनीतिक स्थान खोने का डर, और नेपाल की संप्रभुता पर कथित उल्लंघन के प्रति संवेदनशीलता। हालाँकि तनाव को कम करने के लिए 2022 और 2023 में बैकचौनल वार्ता फिर से शुरू हुई, लेकिन सीमा विवाद का भावनात्मक और प्रतीकात्मक प्रभाव लोगों की चेतना में बना रहा।

2023 तक, एक बारीक तस्वीर उभर कर सामन आई। जबकि नेपाल ने स्पष्ट रूप से अपने विदेशी जुड़ावों में विविधता ला दी थी, उसने भारत को नहीं छोड़ा था। 2023 में प्रधान मंत्री पुष्प कमल दहल (प्रचंड) के नेतृत्व में नए नेतृत्व ने भारत और चीन दोनों के साथ संतुलित संबंधों को पुनर्जीवित करने की कोशिश की। भारत ने नए राजनयिक

दौरों के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की और ऊर्जा निर्यात, पर्यटन सहयोग और डिजिटल कनेक्टिविटी पर नए समझौतों पर हस्ताक्षर किए[13]।

5. द्विपक्षीय कूटनीति में रणनीतिक बदलाव बनाम निरंतरता

2004 और 2023 के बीच भारत–नेपाल संबंध महत्वपूर्ण रणनीतिक बदलावों और स्थायी निरंतरताओं दोनों को दर्शाते हैं। विकसित होते भू–राजनीतिक संदर्भ, नेपाल के आंतरिक राजनीतिक परिवर्तन और भारत की बदलती विदेश नीति की स्थिति ने एक अधिक गतिशील और जटिल कूटनीतिक बातचीत में योगदान दिया है। यह खंड परिवर्तन और स्थिरता की इन दोहरी धाराओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है जिसने दो दशकों में द्विपक्षीय कूटनीति को आकार दिया है[14]।

नेपाल की विदेश नीति की स्थिति में सबसे स्पष्ट परिवर्तन निर्भरता से दावे की ओर बदलाव है। यह मुखरता कई तरीकों से प्रकट हुई:

- भारत पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने के लिए नेपाल की विदेशी साझेदारी, विशेष रूप से चीन के साथ, में विविधता लाना।
- 2020 में सीमा दावों (लिपुलेख, कालापानी, लिम्पियाधुरा) को अपने राष्टोय मानचित्र और संविधान में औपचारिक रूप से शामिल करना।
- कूटनीतिक वार्ता में अधिक सैद्धांतिक रुख, जो 2015 में संवैधानिक घोषणा के दौरान भारत की चिंताओं के प्रति इसकी दृढ़ प्रतिक्रिया में देखा गया[15]।

इसके विपरीत, भारत पारंपरिक रूप से प्रमुख भूमिका से पुनर्संयोजित जुड़ाव की ओर बढ़ गया, जिसकी पहचान इस प्रकार है:

- अभिजात वर्ग–केंद्रित कूटनीति से लोगों से लोगों और विकास–संचालित जुड़ाव की ओर बदलाव।
- कनेक्टिविटी, ऊर्जा और धार्मिक कूटनीति में रणनीतिक निवेश।
- नेपाल की विदेश नीति के विविधीकरण के लिए अधिक समायोजन, इसकी एजेंसी की सावधानीपूर्वक मान्यता के साथ।

ये बदलाव एक परिपक्व संबंध का संकेत देते हैं, जहाँ दोनों देश व्यापक संरेखण या नियंत्रण के बजाय मुद्दे–आधारित कूटनीति पर अधिक से अधिक संलग्न होते हैं। इन रणनीतिक बदलावों के बावजूद, संबंधों में आधारभूत निरंतरताएं उल्लेखनीय बनी हुई हैं:

- भौगोलिक और आर्थिक अंतरनिर्भरता बनी हुई है। नेपाल का 60% से अधिक व्यापार भारत के साथ होता है, और भारत नेपाल के आयात और निर्यात के लिए प्राथमिक पारगमन देश बना हुआ है।

- खुली सीमा व्यवस्था, हालांकि कभी–कभी विवादित होती है, लेकिन कायम रही है। यह लोगों की मुक्त आवाजाही की अनुमति देती है, जिससे सीमा पार गहरे पारिवारिक, सांस्कृतिक और श्रम संबंध बनते हैं।
- सांस्कृतिक और धार्मिक समानताएं कूटनीतिक रूप से लाभ उठाती रहती हैं। साझा हिंदू परंपराएं, तीर्थयात्रा मार्ग और भाषाई ओवरलैप (विशेष रूप से तराई क्षेत्र में) सॉफ्ट पावर चौनलों को बनाए रखते हैं और द्विपक्षीय संबंधों में परिचितता की एक अंतर्निहित धारा में योगदान करते हैं[16]।

दिलचस्प बात यह है कि इस रिश्ते ने हाइब्रिड चरित्र भी विकसित किया है, जहाँ कूटनीतिक प्रतिस्पर्धा सहयोग के साथ–साथ मौजूद है। जबकि सीमा विवाद और कूटनीतिक उपेक्षाएँ हुई हैं, दोनों देशों ने एक साथः

- जलविद्युत विकास और बिजली व्यापार पर सहयोग किया है।
- रेलवे और राजमार्गों जैसी सीमा पार अवसंरचना पहलों को गहरा किया है।
- द्विपक्षीय परेशानियों के बावजूद क्षेत्रीय मंचों (जैसे, बिम्सटेक, बीबीआईएन) में शामिल हुए हैं।

यह पटर्न दोनों पक्षों की रणनीतिक व्यावहारिकता को दर्शाता है, जो यह सुझाव देता है कि राष्ट्रवादी राजनीति भले ही अशांति का कारण बन सकती है, लेकिन मुख्य द्विपक्षीय हित स्थिरता के रूप में कार्य करते हैं।

6. निष्कर्ष

2004 से 2023 तक भारत–नेपाल द्विपक्षीय कूटनीति का विकास रणनीतिक बदलावों और गहरी जड़ें जमाए हुए निरंतरताओं के जटिल अंतर्संबंध को दर्शाता है। इस अवधि में नेपाल ने अपनी संप्रभुता को अधिक आत्मविश्वास से स्थापित किया है, अपनी विदेशी साझेदारियों में विविधता लाई है, सबसे खास तौर पर चीन के साथ और भारत की पारंपरिक प्रभुत्व की स्थिति को चुनौती दी है। साथ ही, भारत ने एक आधिपत्यपूर्ण रुख से एक अधिक सूक्ष्म और विकास–संचालित जुड़ाव रणनीति में बदलाव किया है, जो इसकी व्यापक "पड़ोसी पहले" नीति के साथ संरेखित है।

2015 की नाकाबंदी और 2020 के सीमा मानचित्र विवाद जैसे तनावों के बावजूद, रिश्ते में अपूरणीय रूप से दरार नहीं आई है। इसके बजाय, दोनों देशों ने बुनियादी ढांचा परियोजनाओं, धार्मिक कूटनीति, ऊर्जा व्यापार और स्वास्थ्य सहयोग के माध्यम से फिर से जुड़ने, लचीली कूटनीति की क्षमता का प्रदर्शन किया है। यह न केवल अभिजात वर्ग की राजनीति से बल्कि आर्थिक आवश्यकता, लोगों से लोगों के संबंधों और सांस्कृतिक आत्मीयता से प्रेरित एक परिपक्व द्विपक्षीय संबंध को दर्शाता है।

दोनों राज्यों को बार–बार होने वाली परेशानियों को दूर करने और संकट संचार में सुधार करने के लिए स्थायी राजनयिक तंत्र स्थापित करने से लाभ होगा। जलवायु लचीलापन, डिजिटल कनेक्टिविटी, शिक्षा और उप–क्षेत्रीय बुनियादी ढांचे में सहयोग बढ़ाने की भी गुंजाइश है।

अंततः, भारत–नेपाल संबंध केवल द्विपक्षीय मामला नहीं है, यह दक्षिण एशिया के व्यापक भू–राजनीतिक बदलावों और रणनीतिक स्वायत्तता और अन्योन्याश्रितता के बीच एक नए संतुलन की क्षेत्रीय खोज का प्रतिबिंब है। यदि समझदारी से प्रबंधित किया जाए, तो अगले दशक में भारत और नेपाल आपसी सम्मान, व्यावहारिकता और साझा समृद्धि पर आधारित आदर्श पड़ोसी के रूप में उभर सकते हैं।

संदर्भ सूची:

[1] पंत, बी, 2024, हैज इंडिया शिफ्टेड इट्स डिप्लोमेसी टुवर्ड नेपाल? ऐनालाइजिंग पोस्ट–ब्लॉकेड रिलेशन्स, बीएमसी रिसर्च जर्नल, 4(1), 80–99।

[2] शर्मा, एन, 2024, पॉलिटिकल एंड कल्चरल रिलेशन्स बिटवीन इंडिया एंड नेपाल, टीएसएस रिव्यू, 12(2), 45–60।

[3] श्रेष्ठ, एस, 2020, द बॉर्डर डिस्प्यूट्स बिटवीन नेपाल एंड इंडिया, एनआरएन यूएसए रिपोर्ट, पृष्ठ 1–18।

[4] जैन, ए, 2024, इंडिया एंड नेपालः रेडेफाइनिंग अ रिलेशनशिप, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फाइनेंस, मार्केट्स एंड रिस्क, 9(3), 120–138।

[5] सिंह, आर, 2024, रिवर्स, जियोस्ट्रेटेजी एंड स्टेट सॉवरेनिटीः अंडरस्टैंडिंग द काला पानी डिस्प्यूट, एशियन जियोपॉलिटिकल स्टडीज जर्नल, 8(2), 99–118।

[6] रंजन, ए, 2019, इंडिया–नेपाल रो ओवर द अपडेटेड मैप ऑफ इंडिया, आईएसएएस वर्किंग पेपर नं. 321, 1–32।

[7] पंत, एच.वी., सुपरसन, जे.एम., 2015, इंडियाज नॉन–अलाइनमेंट कंड्रंमः ए ट्वेंटीएथ सेंचुरी पॉलिसी इन ए चेंजिंग वर्ल्ड, इंटरनेशनल अफेयर्स, 91(4), 747–764।

[8] मिलर, एम.सी., डी एस्ट्राडा, के.एस., 2017, प्रैगमेटिज्म इन इंडियन फॉरेन पॉलिसीः हाउ आइडियाज कंस्ट्रेन मोदी, इंटरनेशनल अफेयर्स, 93(1), 27–51।

[9] अब्राहम, आई, 2008, फ्रॉम बांडुंग टू एनएएमः नॉन–अलाइनमेंट एंड इंडियन फॉरेन पॉलिसी, 1947–65, कॉमनवेल्थ एंड कम्पैरटिव पॉलिटिक्स, 46(2), 195–219।

[10] सुभेदी, एस, 1994, इंडिया–नेपाल सेक्योरिटी रिलेशन्स एंड द 1950 पीस एंड फ्रेंडशिप ट्रीटीः टाइम फॉर न्यू पर्सपेक्टिव्स, एशियन सर्वे, 34(3), 273–284।

[11] यूएनएम रिपॉजिटरी, 2020, डिस्प्यूटेड टेरिटरीज बिटवीन नेपाल एंड इंडियाकृकाला पानी, लिम्पियाधुरा, लिपुलेख एंड सुस्ता, यूएनएम प्रेस, पृष्ठ 1–30।

[12] सुभेदी, एस, 2005, डायनामिक्स ऑफ फॉरेन पॉलिसी एंड लॉः अ स्टडी ऑफ इंडोदृ नेपाल रिलेशन्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ 45–78।

[13] विवेकानंद फाउंडेशन, 2018, इंडिया–नेपाल बॉर्डर डिस्प्यूट्स इनक्लूडिंग काला पानी इशू, विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन।

[14] इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन रिसर्च, 2020, इंडो–नेपाल डिस्प्यूट ऑन द काला पानी इशू, आईजेएमईआर, 9(4), 34–49।

[15] राय, के, 2021, हाइड्रोपावर कोऑपरेशन एंड इलेक्ट्रिसिटी ट्रेडः द केस ऑफ अरुण III, एनर्जी पॉलिसी रिव्यू, 29(1), 15–30।

[16] गप्ता, एस, महतो, पी, 2023, असैसिंग द इम्पैक्ट ऑफ द 2015 काठमांडू फ्यूल क्राइसिस ऑन नेपालिज हाउजहोल्ड्स, जर्नल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, 58(7), 1225–1244।